अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्वज्ञान (वर्ष : 2020) दिनांक : दिनांक : 17-12-2020

समय सीमा : 3 घंटा पंचम वर्ष : प्रथम प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

संजया–25

प्र. 1 कोई पांच द्वार लिखें– 10

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र–अंतर द्वार।

(ख) सामायिक चारित्र–प्रवज्या द्वार।

(ग) परिहार विशुद्धि चारित्र–काल द्वार।

(घ) यथाख्यात चारित्र–परिणाम द्वार।

(ङ) सामायिक चारित्र–आकर्ष द्वार।

(च) छेदोपस्थापनीय चारित्र–गतिस्थिति पदवी द्वार।

(छ) परिहार विशुद्धि–स्थिति द्वार।

प्र. 2 किन्हीं छह प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 6

(क) सन्निकर्ष के दो अर्थ लिखें।

(ख) असद्भाव स्थापना का क्या तात्पर्य है?

(ग) षट्स्थान पतित को किस शब्द के द्वारा समझाया गया है?

(घ) परिहार विशुद्धि से सामायिक तथा छेदोपस्थापनीय की शुद्धि अनंत गुण अधिक बताई गई है? इसका क्या कारण है?

(ङ) आकर्ष किसे कहते हैं?

(च) परिहार विशुद्धि चारित्र का लिंग द्वार लिखें।

(छ) साधु यदि आयुष पूर्ण कर प्रथम देवलोक में जाए तो कम से कम कितनी स्थिति प्राप्त करेगा।

प्र. 3 किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 9

(क) सूक्ष्म संपराय चारित्र का अंतर द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीवों की अपेक्षा समय का अंतर किस कारण से बताया गया है?

(ख) सामायिक चारित्र का कर्म उदीरणा द्वार लिखते हुए बतायें कि उदीरणा किसे कहते हैं तथा कितने-कितने कर्मों की उदीरणा किस प्रकार से व किस स्थिति में हो सकती है?

(ग) छेदोपस्थापनीय चारित्र का स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीवों की अपेक्षा वह स्थिति किस तरह से घटित हो सकती है?

(घ) सूक्ष्म संपराय चारित्र का सन्निकर्ष द्वार लिखते हुए बतायें कि उन्हें एक स्थान पतित, अनंत गुण हीन, अनंतगुण अधिक किस अपेक्षा से कहा गया है?

नियंठा–25

प्र. 4 कोई छह द्वार लिखें– 18

(क) पुलाक–काल द्वार

(ख) प्रतिसेवना–गति-स्थिति-पदवी द्वार

(ग) पुलाक–अंतर द्वार।

(घ) कषाय कुशील–आकर्ष द्वार।

(ङ) बकुश–प्रवज्या द्वार।

(च) प्रतिसेवना–सन्निकर्ष

(छ) स्नातक–परिणाम-स्थिति

(ज) बकुश–कर्म उदीरणा।

प्र. 5 किन्हीं सात प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 7

(क) पुलाक की स्थिति (कालमान) कितनी व क्यों है?

(ख) स्थिति द्वार-निर्ग्रंथ की स्थिति जघन्य एक, समय किस अपेक्षा से बताई गई है?

(ग) शरीर द्वार में किस-किस निर्ग्रंथ के तीन शरीर बताए गए हैं?

(घ) बकुश का कल्प द्वार लिखें।

(ङ) ज्ञान व अध्ययन द्वार में किन निर्ग्रंथों के जघन्य आठ प्रवचन माता, उत्कृष्ट चौदह पूर्व लिए है?

(च) अंतर द्वार–स्नातक–के अंतर नहीं का क्या तात्पर्य है?

(छ) उपशम श्रेणी से गिरते समय अर्थात क्या जीव ग्यारहवें से पहले गुणस्थान में आ सकता है?

(ज) प्रतिसेवना द्वार–प्रतिसेवना–'प्रतिसेवी' का क्या अर्थ है?

(झ) स्नातक–असबली शब्द का अर्थ लिखें।

गीतिका-नियंठा दिग्दर्शन–10

प्र. 6 किन्हीं दो प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखें– 2

(क) किसी भी मुनि का छठा गुणस्थान कब बदल जाता है?

(ख) छठे गुणस्थान वाला साधु होता है, यदि कोई उसे असाधु माने तो उसके क्या चीज का दोष लगता है तथा उसे कहाँ देखा जा सकता है?

(ग) निर्ग्रंथ कूटे हुए चावलों जैसे और स्नातक धोने से उज्ज्वल हुए चावलों की भांति होते हैं यह दृष्टांत किस दृष्टि से दिया गया है?

प्र. 7 कोई दो पद्यों को अर्थ लिखते हुए पूर्ण करें– 8

(क) वायस हंसादिक.....धर जोय।

(ख) सम्यक्त थिर.....वातां सोय।

(ग) पडिसेवी मूल.....नहि होय।

(घ) भगवती शतक.....होय।

पूर्व कंठस्थन ज्ञान–40

प्र. 8 सभी प्रश्नों के उत्तर लिखें–

(क) पच्चीस बोल–अंग 13 का भांगा ***अथवा*** अंक 23 का भांगा। 2

(ख) चतुर्भंगी–ग्यारहवां ***अथवा*** उन्नीसवां बोल। 3

(ग) पच्चीस बोल की चर्चा–सोलह से इक्कीस दंडक ***अथवा*** पन्द्रहवां बोल। 3

(घ) तत्व चर्चा–छह द्रव्यों में रूपी अरूपी ***अथवा*** कर्म पर छह द्रव्य, नौ तत्व। 3

(ङ) कर्म प्रकृति–त्रस दशक की अंतिम पांच प्रकृति की विवेचना करें। ***अथवा*** अंतराय कर्म की गुणस्थानों में अवस्थिति लिखें। 4

(च) जैन तत्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) आत्म द्वार ***अथवा*** षड्द्रव्य द्वार–जीवास्तिकाय के बाद वाली व्याख्या लिखें। 3

(छ) प्रतिक्रमण–जीव योनी ***अथवा*** क्षमायाचना सूत्र। 3

(ज) जैन तत्व प्रवेश–(द्वितीय व तृतीय खण्ड) प्रमाण द्वार–प्रारंभ से लिखते हुए अथवा उसके पांच भेद हैं? भेदों के नाम तक लिखें ***अथवा*** धर्म-अधर्म द्वार को प्रारंभ से लेकर धर्म के बारह भेद तक लिखें। 3

(झ) इक्कीस द्वार–सास्वादन सम्यक्त्वी ***अथवा*** चक्षुदर्शनी का पूरा बोल। 4

(ञ) बावन बोल–अठारह पाप स्थान का उदय उपशम, क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्व में कौन? ***अथवा*** अजीव के चौदह भेद ऊँचे, नीचे, तिरछे लोक में कितने? 3

(ट) लघु दण्डक–दृष्टि द्वार–सात नारकी से प्रारंभ कर अंत तक ***अथवा*** उत्पत्ति द्वार-सात नारकी से प्रारंभ कर पृथ्वी काय.....तक लिखें। 3

(ठ) पांच ज्ञान–वर्धमान अवधि ज्ञान ***अथवा*** सम्यक् श्रुत, मिथ्या श्रुत व दूसरी दृष्टि से.....की व्याख्या करें। 3

(ड) लघु दण्डक–स्थिति द्वार–मनुष्य की स्थिति ***अथवा*** देवता की अवगाहना। 3